भोपाल में श्री लालकृष्ण आडवाणी की पुस्तक 'माय कंट्री माय लाइफ' के हिन्दी संस्करण **''मेरा देश मेरा जीवन का लोकार्पण''**

30 जून 2008

''वर्तमान के दौर में ऐसी पुस्तक की आवश्यकता''

श्री श्री रविशंकर

''आडवाणीजी जैसे व्यक्तित्व निर्माण में बहुत समय और ऊर्जा लगती है''

बाबा रामदेव

''इस दौर में जब बड़े वर्ग द्वारा उद्दण्ड जीवन शैली और आपराधिक प्रवृत्तियों को लोक आदर्श माना जाने लगा है, इस पुस्तक की विशेष आवश्यकता हैं। ऐसा लेखन समर्पित और सेवाभावी लोग ही कर सकते हैं। आज देशभक्ति एवं विशाल हृदय का परिचय देते हुए मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रयास बढ़ाने की आवश्यकता है।''

यह उद्गार आर्ट ऑफ लिविंग के प्रणेता श्री श्री रविशंकरजी ने भोपाल में आयोजित श्री लालकृष्ण आडवाणी की पुस्तक 'माय कंट्री माय लाइफ' के हिन्दी अनुवाद 'मेरा देश मेरा जीवन' के लोकार्पण समारोह में प्रकट किए। श्री श्री रविशंकर जी ने कहा कि अनुभवी लोगों से प्रेरणा अर्जित करने एवं आदर्श व्यक्तियों के जीवन के अध्ययन से नई दिशा मिलती है।

हिन्दी पुस्तक को प्रभात प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। प्रकाशक ने पुस्तक के डीलक्स और पेपर बैक संस्करण प्रकाशित किए हैं। कार्यक्रम मोतीलाल नेहरू स्टेडियम लाल परेड ग्राऊंड में सम्पन्न हुआ।

लोकार्पण समारोह में मध्य प्रदेश के कोने–कोने से पहुंचे विद्वजनों, विशिष्टजनों तथा समाज जीवन के सभी क्षेत्रों से पहुंचे प्रतिनिधियों, राज्यमंत्री परिषद के अनेक सदस्यों, विधायक, सांसद, निगम–मण्डलों के अध्यक्ष, अनेक धर्म गुरूओं सहित गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, छत्तीसगढ़ के डॉ. रमन सिंह और कनार्टक के श्री बी. एस. येदियुरप्पा उपस्थित थे। इस भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम में मौसम ने भी साथ दिया। इन दिनों अक्सर वर्षा से भीगने वाले भोपाल पर इंद्रदेव की कृपा बनी रही।

कार्यक्रम में उपस्थित दिल्ली से पहुंचे योग गुरु बाबा रामदेव ने बोलते हुए कहा कि श्री आडवाणी जैसे व्यक्तित्व के निर्माण में एक देश का बहुत समय और ऊर्जा

लगती है। उन्होंने पारदर्शिता, पराक्रमशीलता, दूरदर्शिता और विनयशीलता को वर्तमान युगधर्म की आवश्यकता बताते हुए कहा कि श्री आडवाणी में यह सब है।

योग गुरू ने कहा कि राष्ट्रवादियों का सम्मान और राष्ट्रद्रोहियों के सार्वजनिक अपमान से देश महान बन सकेगा। उन्होंने जम्मू–कश्मीर में अमरनाथ की गुफा के दर्शनार्थियों के विश्राम के लिये भूमि का आबंटन पर उत्पन्न विवाद को दुर्भाग्यपूर्ण बताया। स्वामी रामदेव ने कहा कि विश्व के 32 देशों की भांति भारत में भी यदि सौ फीसदी मतदान को अनिवार्य बना दिया जाये, तो राजनैतिक शुचिता स्थापित हो सकेगी।

दो परिवारों का योगदान : लालकृष्ण आडवाणी

सबसे अंत में बोले पुस्तक के लेखक लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता तथा भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी श्री लालकृष्ण आडवाणी, जो अपनी प्रशंसा से भावुक हो उठे थे। श्री आडवाणी जी ने कहा कि जब उनकी प्रशंसा होती है तो वे भावुक हो उठते हैं। और उन्हें चापलूसी पसंद नहीं है।

इसी भावुक स्वर में उन्होंने कहा कि मेरे जीवन को दो परिवारों ने संवारा है। एक मेरा वैचारिक परिवार–राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और दूसरा, मेरा–निजी परिवार। उन्होंने कहा कि मैं पहले परिवार से युवावस्था में ही जुड़ गया था। संघ ने मुझे वैचारिक संस्कार दिए तो और निजी परिवार ने सांस्कृतिक परम्पराओं को बढ़ाया। और इस तरह दोनों ने मिलकर मेरे जीवन को आकार दिया।

श्री आडवाणी ने कहा है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण और विकास में वैचारिक परिवार का विशेष महत्व है। जीवन में प्राप्त संस्कारों और चिंतन का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है और मैंने इन्हीं अनुभवों को प्रामाणिकता के साथ अपनी पुस्तक 'मेरा देश मेरा जीवन' में पिरोने का प्रयास किया है।

'ए टेल ऑफ टू संत'

उन्होंने बताया कि यह कार्यक्रम 25 जून को होना था जो किन्हीं कारणों से आगे बढ़ाना पड़ा। 25 जून को रेखांकित करते हुए श्री आडवाणी ने आपातस्थिति का स्मरण दिलाया जो कि 1975 में इसी दिन थोपी गई थी। आपातकाल के संस्मरण ताज़ा करते हुए उन्होंने कहा कि बचपन में मैंने चार्ल्स डिकन की पुस्तक 'ऐ टेल ऑफ टू सिटीज़' पढ़ी थी। अतः जब आपातकाल में बंगलौर जेल में बंदी काल के दौरान एक पुस्तक पढ़ने को मिली जिसमें हिटलर के समय में आपातकाल जैसे हालातों का वर्णन था तो मैंने 'ऐ टेल ऑफ टू इमरजेंसी' लिखी। बाद में जब अयोध्या आन्दोलन शुरू हुआ तो उन्होंने कन्हैयालाल मुंशी द्वारा सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्वार हेतु किए गए

प्रयासों के साथ अयोध्या का साम्य ढूंढते हुए 'ऐ टेल ऑफ टू टेम्पल' लिखा। इसी प्रकार मंच (कार्यक्रम) पर विद्यमान दो संतों–श्री श्री रविशंकर जी और बाबा श्री रामदेव–की ओर इंगित करते हुए कहा कि आज 'ऐ टेल ऑफ टू संत' हो गया है।

अंग्रेजी पुस्तक में मामूली त्रुटियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। श्री आडवाणी ने श्री सुरेश सोनी द्वारा जीवन को एक पुस्तक मानने और उसे पढ़ने की उक्ति से सहमति जताते हुए कहा कि समृद्ध भारत का निर्माण उनका स्वप्न है। उन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन एवं लोकार्पण समारोह में सहयोगी सभी व्यक्तियों और विशेष रूप से श्री श्री रविशंकर जी एवं बाबा रामदेव के उपस्थित होने के लिए आभार व्यक्त किया है।

'लाइफ इज ए बुक, रीड इट' : सुरेश सोनी

कार्यक्रम में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह श्री सुरेश सोनी ने अपने भाषण में कहा कि इस पुस्तक के शीर्षक 'मेरा देश मेरा जीवन' से मेरी असहमति है। यह शीर्षक 'मेरा देश ही मेरा जीवन' होना चाहिए था।

श्री सुरेश सोनी ने कहा कि 'मेरा देश मेरा जीवन' पुस्तक में समग्र में भारत के अतीत, वर्तमान और भविष्य की छवियां हैं। उन्होंने कहा कि श्री आडवाणी इतिहासवेत्ता और शोधार्थी नहीं हैं। वे लेखक हैं और उनकी पुस्तक देश के प्रति उनकी असीम आत्मीयता का दिग्दर्शन कराती है। वास्तविक पंथनिरपेक्षता और राष्ट्रीयता के मूलभूत तत्वों के बारे में श्री आडवाणी की चिंता पुस्तक का वैशिष्टय है। श्री सोनी ने कहा कि समग्र में पुस्तक मात्र शब्दों का समुच्चय न होकर एक पूरे कालखंड का दस्तावेज है। श्री सोनी ने 'लाइफ इज ए बुक, रीड इट' कहकर अपनी बात समाप्त की।

पुस्तक प्रकाश स्तम्भ : शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि श्री आडवाणी और देश का रिश्ता अद्वैत का परिचायक है। श्री चौहान ने कहा कि श्री आडवाणी देश और समाज के लिये जीते हैं। वे स्वप्नदृष्टा हैं और देश उनका जीवन, प्राण और सांस है। उन्होंने श्री आडवाणी को श्रीमद भगवत गीता में वर्णित सात्विक कार्यकर्ता के लक्षणों का मूर्तिमान रूप बताया। श्री चौहान ने कहा कि श्री आडवाणी की सहजता और सरलता उन्हें महामानव का दर्जा दिलाती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री आडवाणी का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही भविष्य के भारत की बुनियाद होगा। उन्होंने पुस्तक को प्रकाश स्तम्भ की संज्ञा देते हुए कहा कि सम–सामयिक घटनाओं का इतना प्रामाणिक दस्तावेज और कोई नहीं है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री आडवाणी के सपनों के भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश उनका हमकदम रहेगा। श्री चौहान ने प्रदेश के साढ़े छः करोड़ लोगों की ओर से श्री आडवाणी का स्वागत किया। मुख्यमंत्री ने पुस्तक की प्रस्तावना में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लिखे शब्दों ''आडवाणी जी की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि अभी सामने आनी बाकी है'' के शीघ्र सत्य होने की कामना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि पाने के बाद जब पुस्तक में नया अध्याय जुड़ेगा, तो उस संस्करण का लोकार्पण भी मध्यप्रदेश में होगा।

भारतीय राजनीति के शीर्ष पुरूष : सुषमा स्वराज

प्रदेश से राज्यसभा सदस्य एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सुषमा स्वराज ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा कि यह पुस्तक आजाद भारत के साठ साल के राजनीतिक उतार–चढ़ाव का आंखो देखा वर्णन है। उन्होंने कहा कि पुस्तक में अन्य वृतान्तों के अलावा भारतीय जनता पार्टी के निर्माण की उम्मीदों और सत्तागत दोषों की स्वीकार्यता की ईमानदार अभिव्यक्ति श्री आडवाणी ने की है।

उन्होंने कहा कि श्री आडवाणी भारतीय राजनीति के ऐसे शीर्ष पुरूष हैं जिन्होंने राजनीतिक शब्दकोष को नये शब्द और मुहावरे दिये हैं। उन्होंने कहा कि छद्म पंथनिरपेक्षता और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद श्री आडवाणी के ऐसे ही मुहावरे हैं। श्रीमती स्वराज ने श्री आडवाणी की चार देशव्यापी यात्राओं के हवाले से उन्हें अविराम पथिक बताते हुए कहा कि वे ऐसे राजनेता हैं जिन्होंने यात्राओं के माध्यम से देश से संवाद, सम्पर्क करने के साथ ही देशवासियों को सन्देश भी दिए हैं। सुषमा जी ने कहा कि श्री आडवाणी राजनैतिक भविष्यवेत्ता हैं। छद्म और सच्ची पंथनिरपेक्षता के उनके द्वारा परिभाषित द्वंद गाहे–बगाहे प्रकट होते रहते हैं। उन्होंने कहा कि इन द्वंद का परिणाम ही भारत राष्ट्र का भविष्य तय करेगा। श्रीमती स्वराज ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत के इस नये भविष्य के निर्माता श्री आडवाणी ही होंगे।

'दूसरे दीनदयाल उपाध्याय' : अच्युतानन्द मिश्र

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानन्द मिश्र ने कहा कि 'मेरा देश मेरा जीवन' पुस्तक महज आत्मकथा नहीं है। न ही यह पुस्तक घटनाओं का संकलन और विश्लेषण है। पुस्तक में देश की पीड़ा है, आपातकाल की निरकुंशता है, एक संगठन के निर्मित और पुनगर्ठित होने का ब्यौरा होने के साथ ही भोगा हुआ यथार्थ है। श्री मिश्र ने कहा कि आत्मकथात्मक लेखन के प्रकाशन का जोखिम भरा काम श्री आडवाणी जैसे बिरले व्यक्तित्व ही कर पाते हैं। श्री मिश्र ने 1973 में कानपुर में हुए जनसंघ अधिवेशन, जिसमें श्री आडवाणी को अध्यक्ष बनाया गया था, का स्मरण करते हुए बताया कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तब कहा था कि श्री आडवाणी भारतीय जनता पार्टी के दूसरे दीनदयाल उपाध्याय हैं।

आभार : प्रतिभा आडवाणी

कार्यक्रम के अंत में सभी को धन्यवाद दिया सुश्री प्रतिभा आडवाणी ने। प्रसिद्ध दूरदर्शन कार्यक्रम निर्माता प्रतिभा आडवाणी ने सधे और संयत स्वर में कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। सुश्री प्रतिभा ने जब मंच से एक कविता 'फुट नोट' (पदचिन्ह) सुनाई तो श्री आडवाणी के नेत्रों में अश्रु उमड़ पड़े। जो कार्यक्रम स्थल पर इंद्रदेव नहीं कर पाए उसे आडवाणी जी की 'प्रतिभा' ने कर दिया!

यह कविता प्रतिभा आडवाणी ने अपने पिता लालकृष्ण आडवाणी को, नब्बे के दशक में तत्कालीन सरकार द्वारा 'हवाला कांड' के झूठे आरोपों में फंसाने के समय भेंट की थी। यही कविता श्री आडवाणी के कार्यालय में टंगी है तो पुस्तक में 'बुक मार्क' के रूप में उपस्थित है।

लोकार्पण कार्यक्रम में प्रभात प्रकाशन के श्री प्रभात कुमार और श्री पीयूष कुमार ने श्री आडवाणी सहित अन्य अतिथियों का स्वागत किया। 'वंदे मातरम्' से शुरू हुआ कार्यक्रम 'जन गण मन' से समाप्त हुआ।